जनवरी-मार्च 2019
ISSN: 2321-0443
UGC Journal No. 41285
ई-संस्करण सहित

ज्ञान गरिमा सिंधु

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

अंक : 61

गांधी मार्ग-150

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) भारत सरकार
Commission for Scientific and Technical Terminology
Ministry of Human Resource Development
(Department of Higher Education)
Government of India

CS Scanned with CamScanner

UGC JOURNAL NO.41285

ISSN: 2321-0443

ज्ञान गरिमा सिंधु

(त्रैमासिक पत्रिका)

गांधी मार्ग-150

अंक-61

जनवरी-मार्च 2019

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(उच्चतर शिक्षा विभाग)

भारत सरकार

2019

COMMISSION FOR SCIENTIFIC AND TECHNICAL TERMINOLOGY

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT

(DEPARTMENT OF HIGHER EDUCATION)

GOVERNMENT OF INDIA

2019

CS Scanned with CamScanner

परामर्श एवं संपादन मंडल

प्रधान संपादक

प्रोफेसर अवनीश कुमार, अध्यक्ष

संपादक

डॉ. शाहजाद अहमद अधिकारी

सहायक वैज्ञानिक अधिकारी (राजनीति विज्ञान)

प्रकाशन

श्री शिव कुमार चौधरी, सहायक निदेशक

संपादन समिति

1. देवेन्द्र दत्त नौटियाल, पूर्व सचिव, वै. त. श. आयोग, नई दिल्ली
2. डॉ. राजेश कुमार शर्मा, निदेशक, गाँधी अध्ययन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)
3. डॉ. राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, राजनीति विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.)
4. श्री राजेश कुमार सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, कुल्लू (हि.प्र.)
5. डॉ. रविन्द्र कुमार वर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, आर. एन. कॉलेज, हाजीपुर (बिहार)
6. डॉ. संजीव कुमार तिवारी, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, महाराजा अग्रसेन कॉलेज, वसुन्धरा, नई दिल्ली
7. डॉ. राजीव रंजन गिरि, हिंदी विभाग, राजधानी कॉलेज राजा गार्डन, नई दिल्ली
8. डॉ. नावेद जमाल, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
9. डॉ. राधा कुमारी, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, माता सुंदरी कॉलेज, नई दिल्ली
10. डॉ. शांतेष कुमार सिंह, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, शहीद भगत सिंह कॉलेज, नई दिल्ली
11. डॉ. अभय प्रसाद सिंह, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, पी. जी. डी. ए. वी. कॉलेज, नई दिल्ली
12. डॉ. हरिराम परिहार, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय कॉलेज, जोधपुर (राजस्थान)
13. डॉ. दिनेश कुमार गहलोत, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)
14. श्री. आदित्य अंशु, सहायक प्रोफेसर, नोएडा इंटरनेशनल युनिवर्सिटी, नोएडा (उ. प्र.)
15. डॉ. संजय शर्मा, सहायक प्रोफेसर, भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून (उत्तराखण्ड)
16. डॉ. प्रदीप्तों मुखर्जी, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग एच. एम. कॉलेज फॉर वुमेन, कोलकता (प.ब.)
17. डॉ. शिल्पा नंदी, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग खुदी राम बोस, सेन्ट्रल कॉलेज, कोलकता (प. ब.)
18. डॉ. रेणु सिंह, सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
19. डॉ. मोहम्मद शब्बीर, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मोतीलाल नेहरु कॉलेज, दिल्ली
20. डॉ. अनुशब्द, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर (असम)

CS Scanned with CamScanner

अनुक्रम

आलेख	लेखक	पृष्ठ संख्या
मानव, प्रकृति एवं पर्यावरण		
1. गाँधी का पर्यावरण-विषयक विचार	डॉ. राजेंद्र कुमार पांडेय	1
2. भारत में स्वास्थ्य चुनौतियाँ एवं गांधीवादी निदान	प्रो.उशाविंदर कौर पोपली, आनंद सौरभ	9
3. प्रकृति, संस्कृति और महात्मा	प्रेम प्रकाश	16
4. गाँधी-दर्शन में मानवाधिकारों की संकल्पना	डॉ. शशि वर्मा	23
5. गाँधी और पर्यावरण	उमेश कुमार	31
6. गाँधी और मानवाधिकार	डॉ. नरेश कुमार सिंह	35
आर्थिक आयाम		
1. संधारणीय विकास और गांधी –दर्शन	डॉ.संतोष कुमार सिंह, डॉ.राकेश कुमारमीणा	41
2. गांधी का अर्थशास्त्र और नारी सशक्तिकरण	डॉ. नावेद जमाल, संजीव कुमार सिंह	50
3. खादी के पुनर्जन्म की कहानी	डॉ. पंकज कुमार सिंह	57
4. ग्राम स्वराज की सार्थकता	डॉ. राखी चौहान	65
5. ग्रामीण औद्योगीकरण एवं कम्युनिटी रेडियो	डॉ. रेणु सिंह	72
सामाजिक एवं शैक्षणिक सरोकार		
1. 'नयी तालीम' : एक सामयिक शिक्षा –दर्शन	डॉ. डी. के. पी चौधरी	79
2. गांधी की नयी तालीम की प्रासंगिकता	डॉ. अनुशब्द	86
3. अस्पृश्यता का प्रश्न	डॉ. राजीव कुमार सिंह	92
4. संधारणीय विकास का शिक्षण प्रतिरूप	डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र एवं डा. रवनीत	99

CS Scanned with CamScanner

गांधी की नयी तालीम प्रासंगिकता

डॉ. अनुशब्द[16]

21वीं सदी का भारत कई सवालों और विमर्शों से जूझ रहा है। देश की शिक्षा-व्यवस्था, विशेषकर प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप कैसा हो? उन्हीं में से एक महत्वपूर्ण सवाल है। यह सोचने का विषय है कि शिक्षा संबंध तमाम संस्तुतियों, प्रस्तावों और अधिनियमों के बावजूद क्या वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था, शिक्षा के मूल लक्ष्य तक पहुँचने में सफल हो पायी है? विभिन्न शिक्षाविदों का मत रहा है कि शिक्षा मनुष्य के निर्माण की प्रक्रिया है। ऐसे में आज मनुष्य जिस तेज रफ्तार से यंत्र में तब्दील हो रहा है वह कौन-सी प्रक्रिया की वर्तमान उपज या परिणति है? यह विचारणीय है। मूल्य-विहीन, संवेदन-शून्य, हिंसक मनुष्य का निर्माण करने वाली शिक्षा-व्यवस्था हमसे बार-बार अपनी दशा और दिशा पर पुनर्विचार करने की मांग करती है। इन्हीं सवालों के बीच हाल के दिनों में वैकल्पिक शिक्षा-व्यवस्था की बहस ने फिर से जोर पकड़ा है। वैकल्पिक शिक्षा-व्यवस्था से विद्वानों का आशय एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था से है जो भौतिक उपलब्धि को मानव विकास की कसौटी मानने वाली शिक्षा-व्यवस्था के बरक्स स्वावलंबन को बल देने वाली तथा सहयोग और सामूहिकता जैसे मानवीय मूल्यों की संवाहिका हो। इसी क्रम में जब हम भारतीय एवं पश्चिमी विचारक के शैक्षिक-चिंतन पर नजर डालते हैं तो महात्मा गांधी का शैक्षिक-दर्शन सहसा हमारा ध्यान अपनी ओर खींचता है। मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा में उपस्थित गुणों के सर्वांगीण विकास को शिक्षा कालक्ष्य मानने वाले गांधी का शैक्षिक चिंतन भारतीय परिवेश के लिए हर युग में प्रासंगिक प्रतीत होता है।

ध्यातव्य है कि गांधी के शिक्षा संबंधी विचार देश की आवश्यकताओं की उपज हैं, अतः वे व्यावहारिक धरातल पर उतारे जाने योग्य हैं। 'आत्मानुभूति' को शिक्षा का प्रधान उद्देश्य मानने वाले गांधी जिस शिक्षा की वकालत करते हैं वह मनुष्य को एक बेहतर मनुष्य बनाने के लिए है, न कि एक वस्तु, जो बाजार के समक्ष अपनी कीमत लगवाने के लिए समस्त मानवीय-मूल्यों को ताक पर रख दे। इसलिए चरित्र के विकास को भी गांधी ने शिक्षा के प्रधान उद्देश्यों में शामिल किया है। गांधी के शैक्षिक चिंतन का साकार रूप हम 'बुनियादी शिक्षा' या 'नयी तालीम' के रूप में पाते हैं। उनकी इस 'नयी तालीम' की पृष्ठभूमि में अतीत की स्मृति, वर्तमान का बोध और भविष्य की चिंता की जटिल समग्रता शामिल थी। यह केवल विचार के रूप में नहीं, हृदय के विवेक के रूप में उपस्थित थी। इसी हृदय के विवेक को जाग्रत एवं विकसित करने को गांधी शिक्षा का मूलभूत प्रयोजन मानते थे। इसलिए औपनिवेशिक शिक्षा को खारिज करते हुए नयी तालीम को प्रतिष्ठित करते हैं। 1937ई. में वर्धा शिक्षा सम्मेलन में महात्मा गांधी ने मूल/बुनियादी शिक्षा संबंधी अपनी धारणा को व्यक्त करते हुए कहा था- 'देश की वर्तमान शिक्षा पद्धति किसी भी तरह की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकती है। इस शिक्षा

[16] सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर (असम)

CS Scanned with CamScanner